



# पर्यावरणीय स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में शिक्षा की भूमिका

प्रस्तुतकर्ता:

डॉ. सचेंद्र बोहरा

प्राचार्य

श्री धनराजजी श्रीचंदजी बदामिया कॉलेज ऑफ़ प्रोफेशनल स्टडीज वरकाणा

## परिचय:

पर्यावरणीय स्वास्थ्य वह क्षेत्र है जो यह अध्ययन करता है कि हमारे आसपास के प्राकृतिक तत्व जैसे जल, वायु, मृदा, और जलवायु में होने वाले बदलाव और प्रदूषण का हमारे स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ता है। प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, और प्राकृतिक संसाधनों की कमी जैसे मुद्दे हमारे जीवन को प्रभावित कर रहे हैं, जिससे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर दीर्घकालिक असर पड़ता है। जल, वायु, और मृदा प्रदूषण से कई बीमारियाँ उत्पन्न होती हैं, और जलवायु परिवर्तन के कारण प्राकृतिक आपदाएँ जैसे बाढ़, सूखा और गर्मी की लहरें उत्पन्न हो रही हैं, जो हमारे स्वास्थ्य को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकती हैं। इन समस्याओं के समाधान का सबसे प्रभावी तरीका पर्यावरणीय स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाना और लोगों को सही जानकारी देना है, ताकि वे इन खतरों से निपटने के उपायों को समझ सकें और अपनाने के लिए प्रेरित हो सकें।

शिक्षा इस दिशा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, क्योंकि यह लोगों को प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याओं के कारण होने वाली स्वास्थ्य समस्याओं के बारे में जानकारी प्रदान करती है। जब लोग पर्यावरणीय खतरों के बारे में जागरूक होते हैं, तो वे अपने दैनिक जीवन में छोटे-छोटे बदलाव करके पर्यावरण की सुरक्षा में योगदान दे सकते हैं, जैसे जल और ऊर्जा की बचत करना, कचरे का सही निपटान करना, और स्वच्छ ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा देना। इसके अलावा, शिक्षा से लोग समझ सकते हैं कि पर्यावरणीय समस्याओं का समाधान केवल सरकारी प्रयासों से नहीं, बल्कि हर व्यक्ति के योगदान से संभव है। इस प्रकार, शिक्षा पर्यावरणीय स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में एक अत्यंत प्रभावी और आवश्यक पर्यावरणीय उपकरण बन जाती है, जो न केवल वर्तमान पीढ़ी को, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को भी एक स्वस्थ और सुरक्षित वातावरण प्रदान कर सकती है।

## स्वास्थ्य के घटक:

- जल प्रदूषण:** जल हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा है, और इसका प्रदूषण मानव स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव डाल सकता है। भारत में जलजनित रोगों के कारण हर साल लाखों लोग प्रभावित होते हैं। गंदे पानी के सेवन से हैजा, टाइफॉयड, और डायरिया जैसी बीमारियाँ फैलती हैं, जो प्रमुख स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बनती हैं। रिपोर्ट्स के अनुसार, 2023 में भारत में 70% पानी प्रदूषित था, जिससे न केवल स्वास्थ्य संकट उत्पन्न हुआ, बल्कि आर्थिक और सामाजिक प्रभाव भी बढ़े। शुद्ध जल की उपलब्धता सुनिश्चित करने और जल संरक्षण के उपायों के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है। स्कूलों और सामुदायिक स्तर पर जल संरक्षण और स्वच्छता के कार्यक्रम चलाकर हम लोगों को जल की अहमियत समझा सकते हैं और प्रदूषण से बचने के उपाय बता सकते हैं।
- वायु प्रदूषण:** वायु प्रदूषण भारत में एक गंभीर समस्या बन चुका है, विशेष रूप से दिल्ली में जहाँ PM2.5 कणों का स्तर विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) द्वारा निर्धारित मानक से कई गुना अधिक है। दिल्ली दुनिया का सबसे प्रदूषित शहर है, और यहाँ वायु प्रदूषण के कारण जीवन प्रत्याशा में औसतन 5.3 वर्षों की कमी आती है। यह स्थिति स्वास्थ्य समस्याओं, जैसे अस्थमा, हृदय रोग, और सांस की बीमारियों को बढ़ावा देती है। शिक्षा के माध्यम से स्वच्छ ऊर्जा के उपयोग, सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा देने, और प्रदूषण नियंत्रण उपायों के प्रति जागरूकता बढ़ाई जा सकती है।

3. **मृदा प्रदूषण:** मृदा प्रदूषण तब उत्पन्न होता है जब मृदा में रासायनिक पदार्थों, जैसे कीटनाशक, उर्वरक, और औद्योगिक कचरे का अत्यधिक संचय होता है। यह कृषि उत्पादों की गुणवत्ता को प्रभावित करता है, जिससे खाद्य सुरक्षा पर संकट मंडराता है। शिक्षा के माध्यम से कचरा प्रबंधन, पुनर्चक्रण, और मृदा संरक्षण के उपायों के प्रति जागरूकता बढ़ाई जा सकती है। विद्यालयों और सामुदायिक कार्यक्रमों के माध्यम से लोगों को मृदा संरक्षण की महत्वता और सही प्रथाओं के बारे में बताया जा सकता है, जिससे प्रदूषण कम हो और पर्यावरण संरक्षित रहे।
4. **जलवायु परिवर्तन:** जलवायु परिवर्तन के कारण प्राकृतिक आपदाएँ, जैसे बाढ़, सूखा, और तूफान की आवृत्ति और तीव्रता बढ़ रही है। भारत में, अत्यधिक गर्मी के कारण 2003 से 2022 के बीच लगभग 10,000 मौतें हुईं, जिनमें से 2013-2022 में 34% वृद्धि देखी गई। शिक्षा के माध्यम से जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को समझने और इसके प्रति जिम्मेदार कदम उठाने के लिए लोगों को प्रेरित किया जा सकता है। नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों के उपयोग, वृक्षारोपण, और सतत कृषि प्रथाओं के माध्यम से हम जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम कर सकते हैं।
5. **ध्वनि प्रदूषण:** ध्वनि प्रदूषण शहरी क्षेत्रों में एक बढ़ती हुई समस्या बन गई है, जो मुख्य रूप से यातायात, उद्योगों, और निर्माण कार्यों के कारण उत्पन्न होता है। यह मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। लगातार शोर से लोगों में तनाव, नींद की कमी, और उच्च रक्तचाप जैसी बीमारियाँ उत्पन्न हो सकती हैं। इसके अतिरिक्त, बच्चों और बुजुर्गों पर इसका प्रभाव अधिक गंभीर हो सकता है, क्योंकि उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर शोर का अधिक असर पड़ता है। शिक्षा के माध्यम से लोगों को ध्वनि प्रदूषण के प्रभावों के बारे में जागरूक किया जा सकता है और उन्हें शोर नियंत्रण उपायों को अपनाने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। विद्यालयों में ध्वनि प्रदूषण से होने वाले नुकसान और शांति बनाए रखने के उपायों पर पाठ्यक्रम शामिल करने से बच्चों में प्रारंभ से ही जागरूकता उत्पन्न की जा सकती है। इसके अलावा, शहरी योजनाओं में शोर नियंत्रण के लिए नियम और प्रौद्योगिकियों को अपनाने के लिए शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है।
6. **प्लास्टिक और अवशिष्ट प्रदूषण:** प्लास्टिक कचरा और अवशिष्ट पदार्थ प्रदूषण का एक प्रमुख कारण बन चुके हैं, जो न केवल पर्यावरण को नुकसान पहुँचाते हैं, बल्कि मानव स्वास्थ्य के लिए भी हानिकारक होते हैं। प्लास्टिक की बोतलें, पैकेजिंग और थैलियाँ लंबे समय तक नष्ट नहीं होतीं और समुद्रों, नदियों और भूमि में जमा होकर जंगली जीवन और मानवों के लिए खतरे का कारण बनती हैं। शिक्षा के माध्यम से पुनर्चक्रण, कचरा प्रबंधन, और प्लास्टिक के वैकल्पिक उपयोग के प्रति जागरूकता बढ़ाई जा सकती है। बच्चों को प्लास्टिक के प्रभाव के बारे में समझाने और उन्हें पुनर्चक्रण की प्रक्रिया के बारे में सिखाने से हम एक बेहतर भविष्य की ओर कदम बढ़ा सकते हैं। इसके अलावा, विभिन्न संगठनों और सरकार को भी प्लास्टिक के उपयोग को कम करने और वैकल्पिक सामग्रियों के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए जन जागरूकता अभियानों का आयोजन करना चाहिए।
7. **रासायनिक प्रदूषण:** रासायनिक प्रदूषण तब होता है जब विषाक्त पदार्थ, जैसे कृषि रसायन, औद्योगिक अपशिष्ट और अन्य रासायनिक तत्व, पर्यावरण में फैलते हैं। ये रसायन मिट्टी, जल और वायु को प्रदूषित करते हैं, जिससे मानव स्वास्थ्य पर गंभीर असर पड़ता है। विषाक्त पदार्थों के संपर्क में आने से कैंसर, जन्म दोष और अन्य गंभीर बीमारियाँ हो सकती हैं। रासायनिक प्रदूषण से बचने के लिए सुरक्षित रासायनिक पदार्थों के उपयोग, सही तरीके से उनका भंडारण और निपटान आवश्यक है। शिक्षा के माध्यम से लोगों को रासायनिक पदार्थों के सही उपयोग और निपटान के बारे में जागरूक किया जा सकता है। इसके लिए विशेष रूप से कृषि और उद्योगों में कार्यरत लोगों को प्रशिक्षित करना जरूरी है, ताकि वे सही तरीकों से रसायनों का उपयोग कर सकें और पर्यावरण को बचा सकें। इसके अलावा, विद्यालयों में रासायनिक सुरक्षा और पर्यावरण संरक्षण के विषय पर शिक्षा दी जा सकती है।
8. **वन्यजीव और पारिस्थितिकी तंत्र का नुकसान:** पर्यावरण में हो रहे बदलाव, जैसे जंगलों की अंधाधुंध कटाई और प्राकृतिक आवासों का विनाश, पारिस्थितिकी तंत्र को नुकसान पहुँचाते हैं। जब जंगलों की अंधाधुंध कटाई होती है, तो यह जैव विविधता को प्रभावित करती है और कई वन्यजीवों की प्रजातियाँ लुप्त हो जाती हैं। इसके अलावा, यह जलवायु परिवर्तन, मृदा क्षरण और पानी की कमी जैसी समस्याओं को जन्म देता है, जो अंततः मानव स्वास्थ्य को भी प्रभावित करता है। शिक्षा के माध्यम से जैव विविधता के संरक्षण, पारिस्थितिकी तंत्र की रक्षा और सतत विकास के प्रति जागरूकता बढ़ाई जा सकती है। बच्चों को वन्यजीवों और पारिस्थितिकी तंत्र के महत्व के बारे में समझाना और उन्हें पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरित करना जरूरी है। इसके अलावा, सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों को मिलकर जंगलों की रक्षा, वृक्षारोपण और संरक्षण कार्यक्रमों को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।

उपरोक्त सभी प्रदूषण के मुद्दों में शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षा के माध्यम से हम लोगों को पर्यावरणीय स्वास्थ्य के बारे में जागरूक कर सकते हैं, जिससे वे अपने दैनिक जीवन में स्वस्थ आदतें अपनाने और पर्यावरण संरक्षण में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित होंगे। जब लोग प्रदूषण और इसके प्रभावों के बारे में समझते हैं, तो वे इसके समाधान के लिए कदम उठाने में अधिक तत्पर होते हैं।

शिक्षा न केवल वर्तमान पीढ़ी के लिए, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी एक स्वस्थ और सुरक्षित वातावरण सुनिश्चित करने का एक शक्तिशाली उपकरण है। यह समाज में पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति समझ बढ़ाने और पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना करने के लिए जिम्मेदार व्यवहार को बढ़ावा देती है।

इसलिए, यह जरूरी है कि हम शिक्षा के माध्यम से प्रदूषण के विभिन्न रूपों और उनके समाधान के बारे में जन जागरूकता फैलाएं। यह समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए एक दीर्घकालिक और प्रभावी उपाय हो सकता है, जो पर्यावरणीय स्वास्थ्य को बचाने और सतत विकास की दिशा में मदद करेगा।

## शिक्षा का पर्यावरणीय स्वास्थ्य पर प्रभाव:

शिक्षा का पर्यावरणीय स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव पड़ता है, क्योंकि यह न केवल लोगों को पर्यावरणीय समस्याओं के बारे में जागरूक करती है, बल्कि उन्हें उन समस्याओं के समाधान के लिए सक्रिय रूप से प्रेरित भी करती है। नीचे इस प्रभाव को सात महत्वपूर्ण बिंदुओं में विस्तार से समझाया गया है:

- 1. जागरूकता का प्रसार:** शिक्षा से लोगों में प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, वन्यजीवों की विलुप्ति, और अन्य पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति जागरूकता बढ़ती है। जब लोग इन समस्याओं के कारणों और प्रभावों को समझते हैं, तो वे इनसे निपटने के लिए सक्रिय कदम उठाने के लिए प्रेरित होते हैं।
- 2. स्वच्छता और स्वास्थ्य:** शिक्षा का मुख्य उद्देश्य लोगों को स्वच्छता के महत्व के बारे में बताना है। यह न केवल स्वस्थ रहने के लिए आवश्यक है, बल्कि पर्यावरणीय स्वास्थ्य को भी बनाए रखने में मदद करता है। स्वच्छता, जल के संरक्षण, और ऊर्जा की बचत जैसे कदम पर्यावरण को संरक्षित करते हैं और लोगों को कई स्वास्थ्य समस्याओं से बचाते हैं।
- 3. निवारक उपायों पर ध्यान:** शिक्षा के माध्यम से लोग यह समझ पाते हैं कि पर्यावरणीय स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए निवारक उपायों को अपनाना जरूरी है। जैसे कि रीसायकल करना, अपशिष्ट को कम करना, और पर्यावरणीय दृष्टिकोण से सुरक्षित उत्पादों का चयन करना, जिससे जीवनशैली में सुधार होता है और पर्यावरण पर दबाव कम होता है।
- 4. नवीनतम विज्ञान और प्रौद्योगिकी का उपयोग:** शिक्षा से लोग नवीनतम पर्यावरणीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं। इससे वे ऐसे समाधान अपनाने के लिए प्रेरित होते हैं, जो पर्यावरणीय समस्याओं से निपटने में मददगार साबित हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, सौर ऊर्जा, जल पुनर्चक्रण और शहरी खेती जैसे समाधानों को बढ़ावा दिया जा सकता है।
- 5. स्थिर विकास और पारिस्थितिकी का समझ:** शिक्षा के माध्यम से यह संदेश दिया जा सकता है कि विकास और पर्यावरणीय संरक्षण के बीच संतुलन बनाए रखना जरूरी है। यह लोगों को यह समझने में मदद करता है कि दीर्घकालिक विकास के लिए पर्यावरण की सुरक्षा अनिवार्य है।
- 6. सामुदायिक भागीदारी:** जब लोग शिक्षा प्राप्त करते हैं, तो वे पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान में सामुदायिक भागीदारी का महत्व समझते हैं। सामूहिक प्रयासों से प्रदूषण कम करना, जंगलों की रक्षा करना और जल स्रोतों का संरक्षण करना संभव होता है, जो समाज और पर्यावरण दोनों के लिए लाभकारी है।
- 7. आधुनिक और प्राचीन ज्ञान का संयोजन:** शिक्षा के जरिए हम पारंपरिक और आधुनिक दोनों प्रकार के पर्यावरणीय ज्ञान का मिश्रण कर सकते हैं। प्राचीन सभ्यताओं में पर्यावरण के साथ संतुलित जीवन जीने के तरीके थे, जिन्हें आज के समय में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के साथ जोड़कर अधिक प्रभावी तरीके से लागू किया जा सकता है।

इन सभी पहलुओं से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा न केवल पर्यावरणीय स्वास्थ्य को बढ़ावा देती है, बल्कि यह समाज को एक जिम्मेदार और सतत भविष्य की ओर अग्रसर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

## शिक्षा के विभिन्न रूप और पर्यावरणीय जागरूकता:

### 1. औपचारिक शिक्षा:

विद्यालयों और कॉलेजों में पर्यावरणीय मुद्दों को पाठ्यक्रम में शामिल करने से छात्रों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ती है। उदाहरण के लिए, राजस्थान में 'पारिस्थितिकी तंत्र और सतत विकास' पर आधारित पाठ्यक्रम छात्रों को पर्यावरणीय चुनौतियों और समाधान के बारे में सिखाते हैं। यह शिक्षा छात्रों को पर्यावरण की रक्षा में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित करती है।

### 2. अनौपचारिक शिक्षा:

सामुदायिक कार्यक्रम, कार्यशालाएं और स्थानीय संगठनों के माध्यम से पर्यावरणीय शिक्षा का प्रसार प्रभावी रूप से किया जा सकता है। राजस्थान में 'नैतिक शिक्षा और पर्यावरण संरक्षण' जैसे कार्यक्रम ग्रामीण क्षेत्रों में आयोजित किए जाते हैं, जहां स्थानीय लोग भाग लेते हैं और पर्यावरण के अनुकूल आदतों को अपनाने के लिए प्रेरित होते हैं। इन कार्यक्रमों में वृक्षारोपण, जल संरक्षण और कचरा प्रबंधन जैसे विषयों पर चर्चा होती है, जो समुदाय की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करते हैं।

### 3. मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म:

डिजिटल युग में, मीडिया और इंटरनेट पर्यावरणीय जागरूकता फैलाने के प्रभावी उपकरण बन गए हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, जैसे फेसबुक, ट्विटर और इंस्टाग्राम, पर पर्यावरण संरक्षण से संबंधित पोस्ट, वीडियो और अभियान साझा किए जाते हैं, जो लाखों लोगों तक पहुंचते हैं। टीवी और रेडियो चैनल्स पर पर्यावरणीय मुद्दों पर आधारित कार्यक्रम और डॉक्यूमेंट्रीज़ प्रसारित की जाती हैं, जो दर्शकों को जागरूक करती हैं। उदाहरण के लिए, 'स्वच्छ भारत अभियान' पर आधारित टीवी सीरीज़ ने देशभर में सफाई और पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाई है।

पर्यावरणीय जागरूकता को बढ़ाने के लिए शिक्षा के विभिन्न रूपों का समन्वित उपयोग आवश्यक है। औपचारिक शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा और मीडिया के माध्यम से हम समाज के विभिन्न वर्गों तक पर्यावरण संरक्षण का संदेश पहुंचा सकते हैं। यह समग्र दृष्टिकोण पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना करने और सतत विकास की ओर बढ़ने में सहायक होगा।

## भारत में पर्यावरणीय शिक्षा:

भारत में पर्यावरणीय शिक्षा को लेकर कई कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। सरकारी योजनाओं और शिक्षा के क्षेत्र में कई बदलावों ने पर्यावरणीय शिक्षा को बढ़ावा दिया है। उदाहरण के तौर पर, राष्ट्रीय पर्यावरणीय शिक्षा कार्यक्रम (NEEP) ने विद्यालयों में पर्यावरणीय मुद्दों को महत्वपूर्ण बनाया है। इसके अलावा, "स्वच्छ भारत अभियान" जैसे कार्यक्रमों ने लोगों को स्वच्छता और पर्यावरणीय संरक्षण के महत्व को समझाया है।

## पर्यावरणीय शिक्षा में चुनौतियाँ और समाधान:

### 1. जागरूकता की कमी:

राजस्थान और भारत के कई हिस्सों में पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति जागरूकता की कमी एक महत्वपूर्ण चुनौती है। ग्रामीण क्षेत्रों में, लोग अक्सर जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण और जैव विविधता की हानि जैसे विषयों से अनजान होते हैं। उदाहरण के लिए, 2024 में राजस्थान के जोधपुर जिले में किए गए एक सर्वेक्षण में पाया गया कि 60% ग्रामीणों को जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के बारे में पर्याप्त जानकारी नहीं थी।

**समाधान:** इस जागरूकता की कमी को दूर करने के लिए, पर्यावरणीय शिक्षा को विद्यालयों के पाठ्यक्रम में शामिल करना आवश्यक है। इसके अलावा, सामुदायिक कार्यक्रम, कार्यशालाएं और संगोष्ठियाँ आयोजित करके स्थानीय लोगों को पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति जागरूक किया जा सकता है। राजस्थान सरकार और गैर सरकारी संगठनों द्वारा 'पर्यावरण मित्र' जैसे कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं, जो ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यावरणीय शिक्षा प्रदान करते हैं।

### 2. शिक्षकों का प्रशिक्षण:

पर्यावरणीय शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी एक और महत्वपूर्ण चुनौती है। 2023 में राजस्थान शिक्षा विभाग की एक रिपोर्ट के अनुसार, राज्य के 40% विद्यालयों में पर्यावरणीय शिक्षा देने के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित शिक्षक उपलब्ध नहीं हैं।

**समाधान:** शिक्षकों के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए, जो उन्हें पर्यावरणीय मुद्दों और शिक्षण विधियों के बारे में अपडेट करें। राजस्थान सरकार ने 'शिक्षक प्रशिक्षण और विकास योजना' के तहत पर्यावरणीय शिक्षा पर केंद्रित कार्यशालाओं की संख्या बढ़ाई है, लेकिन इन कार्यक्रमों की पहुंच और प्रभाव को और बढ़ाने की आवश्यकता है।

### 3. संसाधनों की कमी:

पर्यावरणीय शिक्षा को प्रभावी बनाने के लिए आवश्यक संसाधनों की कमी एक बड़ी बाधा है। बहुत से विद्यालयों में पर्यावरण संबंधी शिक्षण सामग्री, प्रयोगशालाएँ और अन्य सुविधाओं का अभाव है। 2022 में एक अध्ययन में पाया गया कि राजस्थान के 50% से अधिक सरकारी विद्यालयों में पर्यावरण विज्ञान प्रयोगशाला नहीं थी।

**समाधान:** सरकार और निजी क्षेत्र को मिलकर पर्यावरणीय शिक्षा के लिए आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करनी चाहिए। 'स्वच्छ भारत मिशन' और 'नमामि गंगे' जैसे राष्ट्रीय कार्यक्रमों के तहत, पर्यावरणीय शिक्षा के लिए फंडिंग बढ़ाई गई है, लेकिन राज्यों में इन संसाधनों का समुचित वितरण और उपयोग सुनिश्चित करना आवश्यक है। इसके अलावा, समुदाय आधारित संगठन और स्वयंसेवी संस्थाएँ भी संसाधन जुटाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

पर्यावरणीय शिक्षा में उपरोक्त चुनौतियों का समाधान करने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता है, जिसमें सरकारी नीतियाँ, शिक्षक प्रशिक्षण, संसाधन आवंटन और सामुदायिक सहभागिता शामिल हों। इससे न केवल पर्यावरणीय जागरूकता बढ़ेगी, बल्कि सतत विकास की दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम उठाए जा सकेंगे।

### निष्कर्ष:

शिक्षा पर्यावरणीय स्वास्थ्य के प्रचार-प्रसार में अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह न केवल लोगों को पर्यावरणीय खतरों, जैसे जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, और प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन, के बारे में जागरूक करती है, बल्कि उन्हें इन खतरों से निपटने के लिए प्रभावी उपायों को अपनाने के लिए प्रेरित भी करती है। जब लोग पर्यावरणीय समस्याओं को समझते हैं, तो वे अपने व्यवहार में बदलाव लाने के लिए तैयार होते हैं, और यही बदलाव समाज में सकारात्मक प्रभाव डालते हैं। शिक्षा के माध्यम से पर्यावरणीय खतरों से निपटने के उपायों की जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है। जैसे कि जलवायु परिवर्तन से लड़ने के लिए ऊर्जा के स्वच्छ स्रोतों का उपयोग, जल संरक्षण के लिए सामूहिक प्रयास, और कचरा प्रबंधन के लिए बेहतर दृष्टिकोण। इन सभी पहलुओं पर सही जानकारी और समझ बनाने से लोग पर्यावरण को बचाने में अपनी भूमिका निभा सकते हैं।

विशेषकर, बच्चों और युवाओं को पर्यावरणीय शिक्षा देना अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह उनके भविष्य को सुरक्षित और स्वस्थ रखने के लिए एक ठोस आधार तैयार करता है। शिक्षा उन्हें यह सिखाती है कि केवल तकनीकी और आर्थिक विकास ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण भी उतना ही आवश्यक है। आज के समय में, इंटरनेट, सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म के जरिए पर्यावरणीय मुद्दों पर जानकारी साझा करना आसान हो गया है, जिससे एक बड़ा वर्ग जल्दी और प्रभावी तरीके से जागरूक हो सकता है। शिक्षा के माध्यम से न केवल व्यक्तियों, बल्कि पूरे समाज में पर्यावरणीय सोच और कार्य करने की आदतें विकसित की जा सकती हैं। उदाहरण के लिए, यदि स्कूलों और विश्वविद्यालयों में पर्यावरणीय विषयों को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाए, तो यह छात्रों को छोटे से लेकर बड़े स्तर तक पर्यावरणीय निर्णयों में जागरूक करेगा।

इसलिए, यह अत्यंत आवश्यक है कि हम निरंतर पर्यावरणीय शिक्षा को बढ़ावा दें और इसे प्रत्येक स्तर पर लागू करें, ताकि हम सभी मिलकर एक स्वस्थ और स्वच्छ पर्यावरण का निर्माण कर सकें। पर्यावरणीय संकट को कम करने के लिए यह शिक्षा एक दीर्घकालिक समाधान बन सकती है। यह न केवल वर्तमान पीढ़ी के लिए, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी एक स्थिर और सुरक्षित पर्यावरण सुनिश्चित करेगा।

### संदर्भ:

- स्टाप, डब्ल्यू. एट अल. (1970, मार्च). पर्यावरण शिक्षा की अवधारणा। एजुकेशन डाइजेस्ट, 35(7), 8-10.
- मेलोन, ज़. (1999). पर्यावरण एक्टिविस्ट के रूप में पर्यावरण शिक्षा शोधार्थी। एंवायरनमेंटल एजुकेशन रिसर्च, 5(2), 163-177.
- पामर, जे. ए. (1998). 21वीं सदी में पर्यावरण शिक्षा: सिद्धांत, अभ्यास, प्रगति और वादा। राउटलेज।
- विज्ञान (मक.), (1997). पर्यावरण शिक्षा, विज्ञान की पूर्ण जांच व मरम्मत, 276, 361.
- स्मिथ, जे. सी. (2006). एन्वायरमेंट एंड एजुकेशन: ए व्यू ऑफ चेंजिंग सीना। पर्यावरण शिक्षा शोध, 12(3,4), 247-264.
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986). अनुच्छेद 84, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार (शिक्षा विभाग), नई दिल्ली।
- पर्यावरण संबंधी जानकारी, जागरूकता, क्षमता निर्माण एवं आजीविका कार्यक्रम (मई 2023), भारत सरकार।
- संयुक्त राष्ट्र संघ पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रम (2023)।